मिल्ली और इजतिमाई़ तक़ाज़े

(सामुदायिक तथा सामाजिक मांगें)

मौलाना अबुलह्सन अ़ली ह्सनी नदवी (रह्मतुल्लाहि अ़लैहि)
भूतपूर्व नाज़िम नदवतुल उलमा लखनऊ

प्रचारक

इस्लाहि मुआ़शरा कमेटी

नदवतुल उलमा पो० बा० 93
बादशाह बाग़, टैगोर मार्ग लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मिल्ली और इजतिमई तकाजे.

(समुदायिक तथा सामाजिक मांगें)

कुरआन मजीद से यह बात साफ़ तौर पर साबित होती है कि उम्मत की मिल्ली (समुदायिक) और सामाजिक मांगों और दीन (धर्म) की सुरक्षा तथा प्रसारण की आवश्यकताओं में अपना माल ख़र्च करने से आंखें बन्द करके लोगों का अपने निजी कारोबार और अपनी मआशी तरक्क़ी व इस्तेह्काम (आर्थिक उन्नति तथा पुष्टि) की चिन्ता तथा चेष्ठा (कोशिश) में लग जाना खुली हुई आत्म हत्या है, और जो जमाअत (समुदाय) यह ग़लत रास्ता अपनाती है वह अपने हाथों हलाकत (विनाश) के ग़ार में गिरता है, और वह उस शाख़ा को काट रही है जिस पर उस का निवास है, बल्कि खुले शब्दों में वह अपने हाथों ज़हर का प्याला पीती है कुरआन मजीद के स्पष्ट शब्द हैः-

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ (البقرة : ١٩٥)

"और ख़र्च करो अल्लाह की राह में और अपनी जानको हलाकत में न डालो " इस आयत के भेद को जानने वाले नुबूवत के मीज़बान (आतिथ्यकर्ता) हज़रत ऐयूब अन्सारी थे उन्होंने कुस्तुनतीनया घेराव में उन लोगों को टोका जो इस आयत से दीन के रास्ते में कुरबानी और ख़तरे में पड़ने की मुख़ालिफ़त (विरोध) निकालते थे और सिद्ध करना चाहते थे कि इस आयत से सिद्ध होता है कि जो दीन (धर्म) के लिए अपनी जान पर खेल जाय या सर हथेली पर रखकर निकले वह आत्महत्या करने वाला है, उन्होंने बताया कि यह आयत हम अन्सार के सम्बंध में उतरी थी जब एक समय तक माली व जानी कुरबानियों (आहुति) के पश्चात इस्लाम के कदम मदीने में जम गये, और इस्लाम के सिपाही और मुजाहिद पैदा हो गये, तो हम अन्सार ने सोचा कि अब कुछ दिनों के लिए इस्लाम की सहायता व सेवा से (अर्थात इस सम्बन्ध के बे हिसाब ख़र्चो से) थोड़े दिनों की छुट्टी लेकर कुछ समय के लिए अपने निजी कारोबार बाग़ात व ज़िराअत (उद्यानों तथा खेतियों) और व्यापारों को संभाल लें, इस लिए कि जिहाद आदि में पूरे तौर पर लग जाने

www.abulhasanalinadwi.org

से यह कारोबार प्रभावित हुए थे, अन्सार तो यह सोच भी न सकते थे कि वह इस्लाम की ख़िदमत और उसके लिए कुरबानियों से स्थायी रूप में छुटकारा पालें, उन्होंने तो वक़्ती तौर पर थोड़े दिनों की छुट्टी को सोचा था कि उनको खुले तथा डरा देने वाले शब्दों में चेतावनी दी गई, और बतलाया गया कि दीन व मिल्लत की मदद से थोड़े दिनों के लिए भी हाथ खींच लेना और इनाफ़िरादी (वेयक्तिक) भलाई और कल्याण की योजना बनाना भी खुली आत्महत्या है, इससे साफ़ तौर पर साबित हुआ कि अफ़राद का वजूद(वेयक्तिक अस्तित्व) मिल्लत से है, और मिल्लत की सुरक्षा तथा पुष्टि में उन की हिफ़ाज़त व इस्तिह्काम (सुरक्षा व दृढ़ता) का भेद छुपा है, जिस प्रकार पत्तों की हरयाली वृक्ष से सम्बन्धित है, वृक्ष से अलग करने के पश्चात किसी प्रकार भी पत्तों की हरियाली को बाकी नहीं रखा जा सकता इसी प्रकार मिल्लत के अफ़राद (लोगों) की ज़िन्दगी और उनकी तरक़्क़ी व बुलन्दी (उन्नति तथा प्रगति) मिल्लत से ही जुड़ी है ओर हर युग में उन के लिए अनादिकालिक सन्देश तथा जीवन-विधान यही है कि :-

पैवस्ता रह शजर से उम्मीदे बहार रख

(बसन्त ऋतु को वृक्ष मार्ग से जोड़े रखिये)

लोग तरंग है और मिल्लत बहती नदी है,

नदी के बिना तरंगों की कल्पना भी सम्भव नहीं।

मौज है दरया में और बैरूने दरया कुछ नहीं

तरंगें नदी में हैं, नदी के बहार कुछ नहीं।

इसी प्रकार इस्लामी मिल्लत के लोग, किसी देश में मिल्लत से कट कर और उसके समुदायिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं और मांगों से आंखें बन्द करके केवल इन्फिरादी (वेयक्तिक) खुशहाली, आर्थिक उन्नति, व्यक्तिगत धन, समृद्धि, वेयक्तिक पद तथा सम्मान शख़्सी हिफ़ाज़त और ज़मानत (प्रतिभूति) पर कभी जीवित, सुरक्षित, सम्मानित, प्रतिष्ठित नहीं रह सकते, मिल्लत की खुली हुई सामाजिक मांगों, तथा आवश्यकताओं को पूरा करने से लोगों का आना कानी करना और उनके बारे में असावधानी बरतना, और अपने ज़ाती कारोबार के विकास और केवल अपने ख़ान्दान के कल्याण तथा सुख चैन की बात सोचना, और अपनी ख़याली जन्नत में मस्त रहना और उसी को वास्तविक प्रसन्नता तथा सफलता जानना

www.abulhasanalinadwi.org

अपने लिए कांटे बोना और पांव पर कुल्हाड़ी मारना है, इस्लामी देशों का पूरा इतिहास और मुसलमानों की भूतकाल की कार्य विधि इस घोषणा की सच्चाई की पुष्टि करती है, जिस नस्ल या मुल्क के मुसलमानों से यह गलती हुई और उन्होंने स्वार्थ परता कोताह नज़री (क्षुद्र दृष्टि) व कोताहअन्देशी (अदूर दर्शिता) से काम लिया वह गलत अक्षर की भांति मिटा दिये गये और उनकी ज़िन्दगी का तार पौद बिखर कर रह गया, अन्दुलुस, बुख़ारा और समरक़न्द का इतिहास इस पर साक्षी है।

दानिशमन्दाना जद्दुजह्द की ज़रूरत:-

हिन्दोस्तान के मुसलमान इस समय निर्णायक काल से गुज़र रहे है, यहां हिन्दी इस्लामी मिल्लत के बाक़ी रखने के लिए उच्च साहस तथा बुद्धिमानी के साथ कोशिश की जरूरत है, यहां मुसलमानों के मिल्ली वजूद, सामाजिक पहचान, तथा इन्फ़िरादियत (व्यक्तत्व) बाक़ी रखने के लिए कुछ कामों की आवश्यकता है, वह इस मुल्क में मुसलमान रहें, सुरक्षित हों, हालात व वाक़िआत से निमट सकें, समय तथा एक तरक़्क़ी करने वाले मुल्क के साथ साथ चल सकें, बल्कि आवयकता हो तो उनके पथप्रदर्शक बन सकें, नेतृत्व की ज़िम्मेदारियां भी संभाल सकें और इस देश को हर प्रकार के भय और पतन से बचायें, इसके लिए कुछ शैक्षिक तथा निर्माणिक कोशिशों तथा आन्दोलन की आवश्यकता है, बड़ी बड़ी सन्स्थाओं, विचार केन्द्रों की जरूरत है, इन संस्थाओं का बाक़ी रहना और उनका मज़बूत होना इस मिल्लत के लिए वही स्थान रखता है जो एक जीवित इन्सान के लिए हवा और पानी का स्थान है, अगर यह तहरीकें, संस्थायें फल फूल रही है, उन्नति कर रही है तो मिल्लत सुरक्षित, उसका भविष्य उज्जवल और देश में उसका स्थान नियत है, किसी बहुसंख्यक, सम्प्रदाय, का पक्षपात, छुद्र दृष्टि या शासन की कमज़ोरी व जानिबदारी, उसको ख़त्म नहीं कर सकती, उसके भविष्य को अंधेरा नहीं कर सकती, और कोई बड़े से बड़ा साम्प्रदायिक दंगा उसको मिटा नहीं सकता, उसकी तक़दीर बदल नहीं सकता।

मुफ़लिस का चिराग:- (ग़रीब का दिया)

परन्तु यदि इस मिल्लत के लोग अपने व्यक्तिगत भविष्य के निर्माण में लगे हैं, इसके धनवान जन मिल्ली आवश्यकताओं से ग़ाफिल हैं, अपनी चाहतों पर तो राजाओं की भांति ख़र्च कर सकते

www.abulhasanalinadwi.org

है, परन्तु मिल्लत को बाक़ी तथा जीवित रखने वाली तहरीकें और संस्थाएं खर्च न पाने से दम तोड़ रहीं है पैसों की कमी के कारण उनका वह हाल है जो शाइर ने अपने दर्द मन्द दिल के लिए लिखा है:-

शाम ही से बुझा सा रहता है
दिल है गोया चिराग़ मुफ़लिस् का

तो फिर मिल्लत के यह अफ़राद (चाहे क़ारून का ख़ज़ाना रखते हों) हर समय ख़तरे में है अल्लाह की निगाह में यह तिनके का भी मूल्य नही रखते, साधारण सा परिवर्तन साधारण सी घटना इन झूठे बनावटी दुर्गो को रेत की दीवार की भांति गिरा देगी, और फिर उनको दिखेगा कि वह हर वस्तु से वंचित हो गये और एक काहिल, खुदा को भुला देने वाली, अपने कर्तव्य को न पहचानने वाली क़ौम की भांति उनका भी यही हाल होगा, जिसे पवित्र कुरआन ने बयान किया है कि:'

فَاتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ (الحشر : ٢)

तो उन पर आया अल्लाह का अज़ाब ऐसी जगह से कि उनको गुमान भी न था और अल्लाह ने डाल दिया उन के दिलों में रूअ़ब (भय)।

हिन्दुस्तान की यही दशा उन लोगों को (जिनकी अल्लाह के नियमों पर नज़र है) कंपा रही है, हिन्दोस्तानी मुसलमान राजनीतिक परिवर्तनों तथा आर्थिक इन्क़िलाबों के बावजूद अब भी इतने धनवान है कि यहां इस्लाम को बाक़ी रखने वाली और मुसलमानों को सुरक्षा देनेवाली हर तहरीक और यहां की बड़ी केन्द्रीय दीनी व तअ़लीमी संस्थायें भली भांति चल सकती है, और उनके लिए एक पल के लिए भी खर्च की कमी नहीं हो सकती और दूसरे देशों की ओर देखने की ज़रूरत नहीं हो सकती और इस्लाही व तअ़मीरी कामों को न कम करने की ज़रूरत न विलम्बित करने की आवश्यकता परन्तु कितनी तहरीकें हैं कि उनकी सफलता के बिना मुसलमानों की शैक्षिक समस्या का समाधान नहीं हो सकता कितनी संस्थायें है जिनके बिना भविष्य में मुसलमानों के सम्बंध में यह कहना सम्भव न होगा कि :-

ख़ास है तरकीब में क़ौमे रसूले हाशिमी

कितने केन्द्र है जो शिक्षित मुसलमानों और नवयुवकों को

www.abulhasanalinadwi.org

ज़िहनी तहज़ीबी इरतिदाद (बौद्धिक तथा सांस्कृतिक धर्म प्रत्याग) से (जो बाढ़ की भांति आ रहा है) बचाने में सहयोग दे सकते हैं, नवयुवकों के मस्तिष्क में इस्लाम और उस के भविष्य पर भरोसा (जिसको पश्चिमी शिक्षा ने डांवांडोल कर दिया है) लौटा सकते है पश्चिम के मुसतशरिक़ीन के फैलाये हुऐ ज़हर के लिए (जो उन सब दमाग़ों को ज़हरीला कर रहा है जिन के हाथ में मुसलिम मुल्कों का नेतृत्व है) औषधि प्रस्तुत कर सकते हैं, और उनकी वैज्ञानिक लेखा परीक्षा (अिल्मी मुहासबा) करके उनके प्रभाव को समाप्त कर सकते है, कितने केन्द्र हैं जो बदले हुए हालात में इस्लाम के सर्वकालिक विधान और इस चलते जीवन के बीच समानता तथा अनुकूलता पैदा कर सकते हैं, और उस वर्ग को जो पश्चिमी विचारों से प्रभावित वास्तविकताओं तथा यथार्थो (वाक़िआत व हकाइक़) से दोचार है उसको नया पथ प्रदर्शण, नया विश्वास और नया ईमान प्रदान कर सकते है और उस काम को पुन: जारी कर सकते है जिस को इस्लाम के मुतकल्लिमीन (वक्ता) ने अपने अपने समय में किया था, कितनी संस्थायें है और कितने लोग है जो पश्चिमी भाषाओं और हिन्दोस्तान की मक़ामी बोलियों में इस्लाम और क़ुरआन, तथा नबी जी के जीवन चरित्र का परिचय करा सकते हैं, और उन सबका शुभ आत्माओं को अपनी ओर खींच सकते है जो सत्य के खोजी तथा बिना देखे नबी जी के आशिक़ है, शिक्षा प्राप्त करने वाले मुसलमान नवयुवकों की सुरक्षा तथा शिक्षा दीक्षा की कितनी योजनायें है जो इनको इलहाद व फ़साद (धर्मविमुखता) से बचा सकते है और उनके अन्दर ईमान की चिंगारी की रक्षा कर सकते है, लेकिन यह सब तहरीकें (संगठन) व इदारे (संस्थायें) या तो साधन न होने के कारण मीठे स्वप्न बन गये है और अगर कहीं इनका वजूद है तो जैसा कि कहा गया ग़रीब के दिया की भांति टिमटिमा रहे है।

इस फोल्डर के मुद्रण तथा प्रसारण की सब को आज्ञा है।

अनुवादक : डा0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाहि मुआशरा कमेटी

नदवतुल उलमा लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org